क्रियायोग आश्रम व अनुसंधान संस्थान

संचालन द्वारा: योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति
संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569243
मोबाइल: 9415217277/81
ई-मेल:yogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर. ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेल: kriyayoga.canada@yahoo

बेवसाइट: kriyayoga-yogisatyam.org
क्रम संख्या .....

प्रकाशनार्थ

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 313 वाँ वर्ष है
दिनाँक :

6 फरवरी, 2013 महाकुंभ क्षेत्र में मोरी रोड पर क्रियायोग का विशेष कार्यक्रम

राष्ट्र निर्माण के लिए आध्यात्मिक जगत में व्याप्त कुरुपताओं का समापन आवश्यक - स्वामी श्री योगी सत्यम्

6 फरवरी 2013 इलाहाबाद । मोरी मार्ग पर सेवारत क्रियायोग शिविर में भारत, कनॉडा, अमरीका, सिंगापुर, रुस, गयाना, पोलैण्ड, ब्राजील आदि अनेक राष्ट्रों से आये हुए साधक, चिकित्सक, इंजीनियर तथा प्रबुद्ध वर्ग भारी संख्या में भाग ले रहे हैं । क्रियायोग शिविर में अन्तराष्ट्रीय क्रियायोग वैज्ञानिक स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने स्पष्ट किया कि राष्ट्र निर्माण के लिए आध्यात्मिक जगत में व्याप्त कुरुपताओं का समापन आवश्यक है। आध्यात्मिक जगत में व्याप्त कुरुपताओं को समाप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि हम परमात्मा में भक्ति अर्पित करने की प्रचलित परम्परा - व्रत, जप, तप, पूजा, हवन, यज्ञ, मंत्र साधना आदि के विषय में वैज्ञानिक की तरह अनुसंधान करें । परमात्मा की सच्ची पूजा क्या है ? गायत्री मंत्र का वास्तविक स्वरुप क्या है ? नाम जप और उल्टा नाम जप का वास्तविक स्वरुप क्या है ? व्रत, तप, साधना, यज्ञ का वास्तविक स्वरुप क्या है ? आदि के विषय में अन्धानुकरण न करके उसके सही स्वरुप को जानने और उसके अनुसरण की आवश्यकता है । शास्त्रों में स्पष्ट किया गया है कि परमात्मा की सच्ची भक्ति से दैहिक, दैविक और भौतिक समस्त कष्टों का समापन हो जाता है । अगर हम यह समझते हैं कि हम परमात्मा की भक्ति कर रहे हैं परन्तु फिर भी आधि व्याधि, तनाव, चिन्ता और अज्ञानता से घिरे हैं तो यह स्वतः स्पष्ट है कि परमात्मा में भक्ति प्रकट करने की प्रचलित परम्परा में अपूर्णता है । स्वामी जी ने आगे स्पष्ट किया कि क्रियायोग ध्यान परमात्मा में सच्ची भक्ति प्रकट करने की वैज्ञानिक क्रिया है जिसके अभ्यास से साधक सम्पूर्ण कष्टों से मुक्त होकर अपने शाश्वत्, अमर स्वरुप का ज्ञान प्राप्त कर लेता है । क्रियायोग का अभ्यास करने

वाले अनेक आत्मज्ञानी संतों ने चैतन्यावस्था में जनमानस के सम्मुख अमरता पर प्रवचन करते हुए पूर्ण आध्यात्मिक गरिमा के साथ शरीर छोड़ा । शरीर छोड़ने के बाद भी उसमें किसी प्रकार की सड़न, दुर्गन्ध अथवा विकार नहीं प्रकट हुआ । ऐसे ऋषियों में योगिराज श्री श्री लाहिड़ी महाशय, स्वामी श्री श्री युक्तेश्वर गिरी, श्री श्री परमहंस योगानन्द, स्वामी प्रणवानन्द, संत कबीर, महात्मा त्रैलंग्य स्वामी आदि का उदाहरण अलौकिक है।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने नाम जप और उल्टा नाम जप की तात्विक और आध्यात्मिक विवेचना करते हुए स्पष्ट किया कि नाम जप का अभिप्राय राम .... राम ...., कृष्ण .....कृष्ण .... आदि को वाचिक रूप में केवल कंण्ठ से उच्चारित करना नहीं है । नाम, अदृश्य का दृश्य में प्रकटीकरण का संबोधन है। अदृश्य सर्वव्यापी शक्ति जब दृश्य रूप में प्रकट होती है तो उसका नामकरण किया जाता है । अतः नाम दृश्य अस्तित्व को व्यक्त करता है । ''जप'' शब्द में ज का अभिप्राय सर्वज्ञ ज्ञान तथा प का अभिप्राय पाने से है। नाम अर्थात् दृश्य रूप किस प्रकार प्रकट हुआ है, इसके बारे में ज्ञान प्राप्त करने को नाम जप कहते हैं । नाम जप सिद्ध करने का अभिप्राय है अदृश्य का दृश्य में प्रकटीकरण के सूक्ष्म विज्ञान का ज्ञान प्राप्त कर लेना।

उल्टा नाम जप को स्पष्ट करते हुए स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आगे कहा कि उल्टा नाम जप का अभिप्राय मरा .... मरा .... कहना नहीं है । यह कपोलकल्पित धारणा है जो पूर्णतया अवैज्ञानिक है । उल्टा नाम जप का अभिप्राय है दृश्य को अदृश्य में रूपान्तरित करने के सूक्ष्म विज्ञान का ज्ञान प्राप्त कर लेना। दृश्य स्वरुप को आवश्यकतानुसार अदृश्य कर लेने का अभ्यास उल्टा नाम जप की क्रिया है । अदृश्य का दृश्य और दृश्य का अदृश्य में रुपान्तरण का पूर्ण ज्ञान ही नाम जप और उल्टा नाम जप अभ्यास की पूर्णता है और इसे ही ब्रह्मज्ञान कहा गया है । जिस मनुष्य को ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति हो जाती है उसे ब्रह्मा कहते हैं ।

स्वामी जी ने क्रियायोग प्रशिक्षण के दौरान आहार विज्ञान के वैज्ञानिक स्वरूप को एल0सी0डी0 प्रोजेक्टर के द्वारा विस्तारपूर्वक स्पष्ट किया । मुक्ति मार्ग पर स्थित क्रियायोग शिविर के भव्य पण्डाल में भारत के अनेक प्रदेशों से आये हुए भक्तों के साथ–साथ अमरीका, कनॉडा, ब्राजील, रूस, गयाना, सिंगापुर, पोलैण्ड, आस्ट्रेलिया आदि देशों से आये हुए साधक भारी संख्या में भाग लेकर शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं । क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम प्रतिदिन कुम्भ मेला क्षेत्र में काली मार्ग पर प्रातः 6 से 7 बजे तक, श्री श्री महावतार बाबा वटवृक्ष परिसर में प्रातः 6:30 बजे से 8 बजे तक, कुम्भ मेला में मुक्ति मार्ग पर प्रातः 8:30 बजे से 9:30 बजे तक तथा दोपहर 2:30 बजे से सायं 5:30 बजे तक और रात्रि 11 बजे से 1 बजे तक हिन्दी तथा अॅग्रजी भाषा में बडे ही प्रभावशाली रूप में चल रहा है ।